THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

FILM—STRIP NO.
MBB—1971— 178-99

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

IASWR

MICROFILM PROJECT MBB-11

MBB-1973-178
1. Film strip number

60
2. Source

MAHĀYĀNASŪTRASAṄGRAHA (Vol. 7)
3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. + 880 = A.D.
5. Year in which MS was copied (Nepali Samvat and Christian Era)

6. Name of Scribe

NEPĀLĪ PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

NEWĀRĪ
8. Script

30 cm. x 8 cm.
9. Size

6
10. Lines to a page

17 (188-204)
11. Number of leaves in complete work

x
12. Missing leaves

x
13. Author and Date of composition (if given)

x
14. Number of Chapters

Sutras of seventh period
15. Remarks

April 10, 1973
Date photographed

॥ ॐ नमो भगवत्यै सूर्य्यावर्त्त स्वरूपायै ॥ दिव्यरूपी महारूपी विरूपी रूपी विश्वरूपा वा [illegible] देवेश्वरी च चण्डरूपा वा कालनाशनी ॥ चण्डमुण्डवधे [illegible] महाचण्डी

कीर्त्तिमती कल्याणी [illegible] शिवा दक्ष [illegible] [illegible] ॥ विद्याधरी शिवा [illegible] [illegible] दा [illegible] ॥ [illegible] देवी महादेवी [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] सर्व [illegible] ॥ [illegible] ॥ दानवान् [illegible] देवी [illegible] दिव्यरूपिणी ॥ [illegible] कीर्त्ति लक्ष्मी [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] कौमारी विश्वरूपिणी विश्वरूपा [illegible] देवी जगदानन्ददायिनी ॥ [illegible]

[illegible] विश्वरूपदा [illegible] महा [illegible] ॥ जगदेकहिता विद्या [illegible] ॥ [illegible] देवी मालिनी [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] देवी [illegible] ॥ [illegible]

दिनीस्वाप्नानि वियानि तिष्ठिनि पितार्थमनानथ॥ यत्कल्पनात्का गीयापिसूनानकर्पसदानुगीनाना सर्वकयत्वात् ध्मनजानानादपयस्कं॥ अथवा मोल

मंपत्वासमफ्जानिष्मनापावग॥ प्रियत्रादयवाक्रुश्वनूपवानुप्रियदर्मयथ॥ किसकृषियपूर्त्तसवजादयमदूपजायाना नवा नमती श्वर्क्सापि: पश्चात्स्वापि

सुखावती॥ ॥आर्यसौवत्युबंधनानामाष्यरूकेन मासमाप्ता॥ ❁ ॥ॐ नमो भगवत्यै आर्यवज्रविदारिण्यै नमो रत्न

त्रयाय नमो धर्माय नमः संघाय॥ एवं मया श्रुतमेकस्मिन् समये भगवान् वज्रमेरुशिखरकूटागारे विहरति स्म वज्रसमनीलं वज्रासनमध्यधिष्ठाय वज्रपाणिर्भावबुद्धानुभावेन

वज्रसमाधिसमापन्नः॥ वज्रपाणिर्वज्रमुद्रावनवज्रासनं सर्वबुद्धाधिष्ठानार्थमधितिष्ठतो नित्यं॥ वज्रमानमपनीयमापि च मन्त्रां क्रियतत्त्वसहितं ददाति। तस्मिन्

प्रतिहता सर्वज्ञापनाज्ञां सर्वसत्त्वाविक्षापनिकरं सर्वसत्त्वानामावेदनकरं सर्वविघ्नाक्ष्वेदनकरं सर्वविघ्नाच्छेदनकरं सर्वपापविशोधनकरं सर्वक

मोनुश्रीधन्यामानदधनप्रिया॥ ऐं श्रीउकमहाश्वादि दिव्यारानमरूपिणा॥ मागनी सर्वदृज्ञानमिलधाम्श्वदश्वनी॥ उद्यमागा॥ विनीतावा॥ तावमावविं
वर्जिगाय वैश्ययक्षी॥ विद्यागात्वदिपिनी॥ श्रमस्कदनी॥ सिदिनी सर्वमानानांसफपागालक्षोमनीश्वाम्गावदमाना॥ वरुउक्षनाम्ध्यक्षवासिनी॥ सनख
ता॥ विम्नालाक्ष्मीविरुर्वक्ष्माविहाविमा॥ नाथगानीमदानध्या वजिगा धर्म्मधानिसा॥ कर्म्मश्वागाश्वना॥ विद्याविश्वगालासमउना॥ वाधिनी सर्वमत्वानां वाः
र्थंगकृत्ता मयना॥ ध्मनादिमृक्तिसंपन्नाग्रवयावयवादिनी॥ सर्वार्थसाधना॥ मजाह्रीनृपापिता विकमा॥ दर्गभीरुकमार्गसीनष्टमार्गप्रदर्शनी॥ १८८
वागिश्वरी महागामक्षीरुष्मीदाधिनप्रदा॥ सर्वानृपाश्वनसा॥ सिद्धिर्योगिनी योगदेश्वनी॥ मनाढनी महाभक्ती प्रीताव्यश्चियदर्शमा॥ सर्वार्थवाहरूपावि
ष्टि सर्व्वनाथमगालया॥ नमोस्तु महादेवी सर्वमत्वार्थदायनी॥ नमोस्तु दिव्यरूपीवः वदर्शनात नमोस्तु ते॥ अष्टोत्तरनमानिनामसिकाल्प्यष्टप॥

किलाय स्वाहा ॥ ॐ वृत्र र वज्र हिलि हिलि किलि किलाय स्वाहा ॥ ॐ आमय र वज्र हिलि हिलि किलाय स्वाहा ॥ ॐ हन र वज्र धनाय स्वाहा ॥ ॐ वज्र हन र वज्र सर्व किलाय स्वा

हा ॥ मणि ह्रि र वज्र … ॥ ह्रि र वज्र सु ॥ ह्रि र वज्र महावज्र अमृत ॥ वज्र सूर्य वज्र एकाह वज्र … य वज्राय स्वाहा ॥ ॐ धन र चिलि र धून हूं हूं ॥

ॐ नमः समन्तबुद्धानां ॥ नमः सर्व तथागतानां ॥ ॐ महाबलवति … महावज्र नाम … वज्र महाबल … नमः पूजित बल र टिटि टिटि ॥ ७ ॥ नमः

हर वज्र वज्रा … ॥ निविर … महा … वज्र … किलाय स्वाहा ॥ नमः समन्तबुद्धानां ॥ नमः श्चण्ड वज्र पाणये महायक्ष सेनापतये ॥ तद्य

था ॥ ॐ हन र वज्र मथ र वज्र धूनु र वज्र दह र वज्र पच र वज्र … र वज्र छिन्द र वज्र भिन्द र वज्र हूं फट् ॥ नमः श्चण्ड वज्र पाणये महाक्रोधाय हन र

वज्र हन सर्वशत्रून् हूं फट् स्वाहा ॥ हृदय ॥ नमः समन्तबुद्धानां नमः श्चण्ड वज्र पाणये हन र … स्वाहा ॥ ॥ आर्य वज्रविदा

र्म्मविशापविकानं सर्व्वशास्त्रादनकानं सर्व्वशाहविसादकनकानं सर्व्वमनायकार्य्यलकानं सर्व्वविश्रमदकनकायनकानी॥ आपि ज्ञानांवापिपिटकनानाशुभिज्ञानां
व्यापिनाभनकानं सर्व्वकाम्मपदं सर्व्वदन्नानांनक्राबींभाल्किवीपापिष्टदांसर्व्वदन्नानाक्रिमनकानं सर्व्वदन्नानांभाहनकानंहुंदंभञ्जमहावनं सर्व्वविघ्नानुमावाय
यक्षडाकडायाभिवाभिग्रानेमानवक्ष्याय नमश्च वज्रडाया सय महायकामनायनाय॥ तद्यथा॥ ॐ हट २ आट्य २ स्फट्य २ भून २ धूनापय २ सर्व्वसत्त्वानि वाब १६२
य २ सर्व्वाश्रय २ श्वय २ स्वद २ इर्व्वाभय २ सर्व्ववृच्चवाधेविपूत्ब २ सैभय २ सर्व्वभकत २ घट २ सैघट्य २ सर्व्वविघ्नावज २ स्फट २ काट्वेश २ काट्वेश २ सट्वेश २ प्यव वज्र २
नाथवज्र २ नायार्त्तिनीदवज्राय स्वाहा॥ ॐ दह लिलि २ ण्ड्र २ नुन २ पिविस्वन २ वान २ वज्रविजयाय स्वाहा॥ ॐ वज्रकिलिकिलाय स्वाहा॥ ॐ फट २ सट २ नट २ मा
नवमालानाय स्वाहा॥ ॐ ज्वन २ विवन २ दन २ सानय २ वज्रविदानमाय स्वाहा॥ ॐ ह्रिद २ भिद २ मठाकिलिकिलाय स्वाहा॥ ॐ बन्ध २ साध वज्रकिलि २

स्वाहा॥ ॐ गणपतिपूजिताय स्वाहा॥ ॐ काश्यपहृदयनन्दनकदन्तश्च स्वाहा॥ ... दिग्विजिन्तपयद्द॥ ॐ नमोस्तु
गण्डहस्तववनाय स्वाहा॥ ॐ प्रसूतविघ्नविनाशविकटमध्यमनाय ... स्वाहा॥ ॐ नमोस्तु गणपत
गणनाथाय॥ ॐ ... ॐ गणनायकाय स्वाहा॥ ॐ गणाधिपताय स्वाहा॥ ॐ लम्बोदराय स्वाहा॥ ॐ गणपतिपूजिताय स्वाहा॥ ॐ प्र
मोदाय स्वाहा॥ ॐ प्रमोदाय स्वाहा॥ ॐ हेरम्बाय स्वाहा॥ ॐ भास्कराय स्वाहा॥ ॐ सिद्धिदाय स्वाहा॥ ॐ पिङ्गलाक्षाय स्वाहा॥ ॐ धूम्रकाय स्वाहा॥ ॐ वक्रतुण्डा
य स्वाहा॥ ॐ एकदन्ताय स्वाहा॥ ॐ ... ॐ विघ्ननाशाय स्वाहा॥ ॐ भूः स्वाहा॥ ॐ भुवः स्वाहा॥ ॐ स्वः स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वाहा॥ ॐ नमो गणपतये
स्वाहा॥ ॐ नमोस्तु गणपतये स्वाहा॥ ॐ नमोस्तु गणपतये ... ॐ गणपतये स्वाहा॥ ॐ गणाधिपताय स्वाहा॥

विशानामब्रह्मनागानन्दयापदृदयंपूलमंत्रीतपापी॥ ॥ॐनमःश्रीगणाधिनाय॥हृदयालंविश्वकादन्तश्वकपिलागजकर्णकं लम्बोदरश्चवि
कटा॥विघ्ननाश॥विनायक॥धूम्रकेतुर्गणाधिपा॥भालचन्द्रगजानन॥वक्रतुण्ड॥शूर्पकर्ण॥हेरम्बस्कन्दपूर्वजः॥षोडशैतानिनामानियःपठेच्छृणुयाद
पिविद्यारम्भेविवाहेचप्रवेशेनिर्गमेतथासंग्रामेसंकटेचैवविघ्नस्तस्यनजायते॥ ॥एवंमयाश्रुतंएकस्मिन्समयेभगवान्राजगृ १२०
हेविहरतिस्म॥गृध्रकूटपर्वतेमहताभिक्षुसंघेनसार्धंमहताबोधिसत्त्वगणेनसार्धंसर्वेषांशिष्याणांप्रवेशतिमाहदेवा॥तत्रखलुपुनस्समयेनभगवानायुष्म
न्तमानन्दमामन्त्रयतेस्म॥यःकश्चिदानन्दकुलपुत्रोवाकुलदुहितावाभिक्षुर्वाभिक्षुणीवाउपासकोवाउपासिकावा॥तस्यसर्वकार्याणिसिध्यन्ति॥विघ्न
नि॥तद्यथा॥ॐनमस्तेमहागणपतयेस्वाहा॥ ॥ॐगणपतयेस्वाहा॥ॐगंगणपतयेस्वाहा॥ॐनमोविघ्नविनाशायस्वाहा॥ॐगांगणपतये॥य

॥ गणपाय ॥ ॐ गहागहगहगहगहागहगहागहगहा ॥ ॐ गीर्वाणपतये स्वाहा ॥ ॐ गणाधिपताय स्वाहा ॥ ॐ गजस्कन्धाय स्वाहा ॥ ॐ गणपतिपूजिताय स्वाहा ॥

ॐ आमोदाय स्वाहा ॥ ॐ प्रमोदाय स्वाहा ॥ ॐ हर्न्दैवाय स्वाहा ॥ ॐ अविघ्नाय स्वाहा ॥ ॐ सिद्धिप्रदाय स्वाहा ॥ ॐ पिंगलाक्षाय स्वाहा ॥ ॐ धूम्रकाय स्वाहा

॥ ॐ गजस्कन्धाय स्वाहा ॥ ॐ परशुहस्ताय स्वाहा ॥ ॐ वक्रतुण्डाय स्वाहा ॥ ॐ विघ्ननाशाय स्वाहा ॥ ॐ कृं हूं स्वाहा ॥ ॐ तनं हूं स्वाहा ॥ ॐ दूं नं स्वाहा ॥ ॐ न

मानम स्वाहा ॥ ॐ नमो हुं गगदहगगमपायै स्वाहा ॥ ॐ नमो हुं गदहगगमदाय ॥ ॐ गहागहगहगहागहगहगहागहगहा ॥ ॐ गीर्वाणपतये स्वाहा ॥ ॐ गणा-

धिपताय स्वाहा ॥ ॐ गजस्कन्धाय स्वाहा ॥ ॐ गणपतिपूजिताय स्वाहा ॥ ॐ आमोदाय स्वाहा ॥ ॐ प्रमोदाय स्वाहा ॥ ॐ हर्न्दैवाय स्वाहा ॥ ॐ अविघ्नाय

स्वाहा ॥ ॐ सिद्धिप्रदाय स्वाहा ॥ ॐ पिंगलाक्षाय स्वाहा ॥ ॐ धूम्रकाय स्वाहा ॥ ॐ एकदन्ताय स्वाहा ॥ ॐ परशुहस्ताय स्वाहा ॥ ॐ वक्रतुण्डाय स्वाहा ॥

ॐ गजाश्वनाय स्वाहा ॥ ॐ गणपतिपूजिताय स्वाहा ॥ ॐ आमोदाय स्वाहा ॥ ॐ प्रमोदाय स्वाहा ॥ ॐ हेरंबाय स्वाहा ॥ ॐ ऋद्धिदाय स्वाहा ॥ ॐ सिद्धिदाय स्वाहा ॥ ॐ पिं-
गलाक्षाय स्वाहा ॥ ॐ धूम्राक्षाय स्वाहा ॥ ॐ एकदन्ताय स्वाहा ॥ ॐ परशुहस्ताय स्वाहा ॥ ॐ वक्रतुण्डाय स्वाहा ॥ ॐ विघ्ननाशाय स्वाहा ॥ ॐ कृनूः स्वाहा ॥ ॐ स्त्रनू-
ः स्वाहा ॥ ॐ स्तुनूः स्वाहा ॥ ॐ दुनूः स्वाहा ॥ ॐ नमो नमः स्वाहा ॥ ॐ नमोस्तु गादहागणपतये ॐ स्वाहा ॥ ॐ नमोस्तु गादहागणपतये ॥ ॐ गं गः गं गः गं गः गं गः गं गः १२१
गं गः गं गः ॥ ॐ गं गणपतये स्वाहा ॥ ॐ गणाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ गजाश्वनाय स्वाहा ॥ ॐ गणपतिपूजिताय स्वाहा ॥ ॐ आमोदाय स्वाहा ॥ ॐ प्रमोदाय स्वाहा ॥
ॐ हेरंबाय स्वाहा ॥ ॐ ऋद्धिदाय स्वाहा ॥ ॐ सिद्धिदाय स्वाहा ॥ ॐ पिंगलाक्षाय स्वाहा ॥ ॐ धूम्राक्षाय स्वाहा ॥ ॐ एकदन्ताय स्वाहा ॥ ॐ परशुहस्ताय स्वाहा ॥
ॐ वक्रतुण्डाय स्वाहा ॥ ॐ विघ्ननाशाय स्वाहा ॥ ॐ कृनूः स्वाहा ॥ ॐ स्त्रनूः स्वाहा ॥ ॐ स्तुनूः स्वाहा ॥ ॐ दुनूः स्वाहा ॥ ॐ नमो नमः स्वाहा ॥ ॐ नमोस्तु गादहाय

ॐ आखिदाय स्वाहा ॥ ॐ सिद्धिदाय स्वाहा ॥ ॐ पिंगलाक्षाय स्वाहा ॥ ॐ धूमाक्षाय स्वाहा ॥ ॐ एकदन्ताय स्वाहा ॥ ॐ पन्नगहस्ताय स्वाहा ॥ ॐ वक्रतुण्डाय स्वा-
हा ॥ ॐ विघ्ननाशाय स्वाहा ॥ ॐ कूनूर स्वाहा ॥ ॐ दूनूर स्वाहा ॥ ॐ उनूर स्वाहा ॥ ॐ दूनूर स्वाहा ॥ ॐ नमो नमः स्वाहा ॥ ॐ नमोस्तु गणनाथाय गणपतये स्वाहा
॥ ॐ नमोस्तु गणनाथाय गणपतये ॥ ॐ गः गः गः गः गः गः गः ॥ ॐ गणपतये स्वाहा ॥ ॐ गणाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ गणेश्वराय स्वाहा ॥ ॐ गपेसंगिभूमि-
गाय स्वाहा ॥ ॐ प्रमोदाय स्वाहा ॥ ॐ प्रमोदाय स्वाहा ॥ ॐ सर्वदाय स्वाहा ॥ ॐ आखिदाय स्वाहा ॥ ॐ सिद्धिदाय स्वाहा ॥ ॐ पिंगलाक्षाय स्वाहा ॥ ॐ धूमाः
क्षाय स्वाहा ॥ ॐ एकदन्ताय स्वाहा ॥ ॐ पन्नगहस्ताय स्वाहा ॥ ॐ वक्रतुण्डाय स्वाहा ॥ ॐ विघ्ननाशाय स्वाहा ॥ ॐ कूनूर स्वाहा ॥ ॐ दूनूर स्वाहा ॥ ॐ उनूर स्वाहा
॥ ॐ दूनूर स्वाहा ॥ ॐ नमो नमः स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा ॥ स्वाहा स्वाहा ॥ स्वाहा ॥ हूं स्वाहा ॥ ददद घकार्यं ददा विघ्नघ्नु स्वाहा ॥ ददद यदि वा नस्य मघत

ॐ विघ्ननाशाय स्वाहा ॥ ॐ कनूरः स्वाहा ॥ ॐ मनूरः स्वाहा ॥ ॐ उनूरः स्वाहा ॥ ॐ पूनूरः स्वाहा ॥ ॐ नमो नमः स्वाहा ॥ ॐ नमोस्तु आमहागणपत ॐ स्वाहा ॥
ॐ नमोस्तु गामहागणपतये ॥ ॐ गः ॥ गः ॥ गः ॥ गः ॥ गः ॥ गः ॥ ॐ गीं गणपतये स्वाहा ॥ ॐ गणाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ गणेश्वराय स्वाहा ॥ ॐ गणपतिपूजि
ताय स्वाहा ॥ ॐ आमोदाय स्वाहा ॥ ॐ प्रमोदाय स्वाहा ॥ ॐ हर्वाय स्वाहा ॥ ॐ ऋद्धिदाय स्वाहा ॥ ॐ सिद्धिदाय स्वाहा ॥ ॐ पिंगलाक्षाय स्वाहा ॥ ॐ कमाक्ष १२१
य स्वाहा ॥ ॐ एकदन्ताय स्वाहा ॥ ॐ पनुण्डकाय स्वाहा ॥ ॐ वक्रतुण्डाय स्वाहा ॥ ॐ विघ्ननाशाय स्वाहा ॥ ॐ कनूरः स्वाहा ॥ ॐ मनूरः स्वाहा ॥ ॐ उनूरः स्वाहा
ॐ पूनूरः स्वाहा ॥ ॐ नमो नमः स्वाहा ॥ ॐ नमोस्तु आमहागणपतये ॐ स्वाहा ॥ ॐ नमोस्तु आमहागणपतये ॥ ॐ गः ॥ गः ॥ गः ॥ गः ॥ गः ॥ गः ॥ ॐ गीं गणप
य स्वाहा ॥ ॐ गणाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ गणेश्वराय स्वाहा ॥ ॐ गणपतिपूजिताय स्वाहा ॥ ॐ आमोदाय स्वाहा ॥ ॐ प्रमोदाय स्वाहा ॥ ॐ हर्वाय स्वाहा ॥

कायागवाना।सामिमामसयत्न्दन्निति॥ ॥आर्य्यगणपतिहृदयानामधारणीसमाप्ता॥ ❀ ॥ नमो भगवत

सर्वतूगयोष्णीषविजयायै॥एवंमयाश्रुतमेकस्मिन्समयेभगवान्सावत्यांविहरतिस्मदीगि॥विमदत्तस्यपामादरावनविहरतिस्म॥तत्रखलुभग

वानाग्राबात्सुमितायुष्मन्थगणाआर्य्यावलोकितेश्वरावाधमत्वमासत्त्याविस्म॥तत्रिपालपूरग्धविमतवात्तानामाधिपतिनिपौतत्त्वायु

ष्मतोभिपीसृष्यादिगायसुखाय॥सर्वतथागतोष्णीषविजयानामधारणीयवावयदभयच्यधवापूर्यातनकथविष्णुनाईमकागयश॥दीर्घा

युष्मतानामृपादायति॥आर्य्यवत्त्वायावलोकितेश्वरावाधिमत्वमहासत्वानुयातननदेकोष्णीगाञ्जलिपूर्गोप्ताभगवन्तमेतदवोचत्॥कथय

तुभगवन्सर्वतथागतोष्णीषविजयानामधारणीपरमहृतगाथा॥अथखलुभगवान्सर्वावगितिपर्यमष्टुलमवलोक्यमहाकारुणिकावलोकितेश्वराया॥

त्वानाःव सर्व्वविनायकानाशि॥ शिवनुखाठ॥ पप सर्व्वकार्य्यसिद्धि पदावगमपायखाठ॥ ॥ ॥ॐ दमातन्दताण्यापाति जदर्य यःकाश्चित्वाःलम
पूणावाजुलइतिा॥ ॥ विजुर्व्वाविजुं भावोउयामदकावाउपा शिकावाःयाःकाश्चिण्वाण्यामानका मजुमाधवनवाणिवलपूजाविद भारकनाणमनवा
वाउस्नुलगाननेवालक्ष्मीमाधवनेवा गानपवानामिगवामिपूणाशिलावाआयाननपाणिजदर्यमत्भवावानकवानयिमार्थी॥ गश्च सर्व्वकार्य्यसिमिसिद्धः
शिवाउहमयश॥ विवायपनिर्य्यक्षनयिणार्थ सर्वकेपमनंगमशिदिनादिनकार्य्यसिद्धकेपसन्कवानानुक्वानयिगाथ्या॥ मराणी गाण्भवाविघ्न १९१
॥नवाथ्यकाश्चिदवानेगवेषीप्त्रवानाकन्यापूवगानशिलपयाग॥ नवाथ्यवाविविद्ध मनार्थगाविघ्नाण॥ धजाणि आणिजाणिक्वनावाविघ्न
णि॥ ॥ॐ दमवावशगवानाकमनादिजवणिदवकवया॥ विमवाणाण्णवाणव मध्वावणीपर्वतमववसानुमाएवगनभुतधिर्व्वघला

य २ सन २ हन दय २ हन २ सर्व्वदुष्टानाधिष्ठानाधिष्ठिता ॥ ॐ ज्व २ वृत्त २ वज्र २ महावज्र वज्राग्नि जयाग्नि विजयाग्नि वज्रज्वालाग्नि वज्राग्नि
वज्रज्वालाग्नि वः वज्रधरिव वज्रव जिणा वज्रावकुदमम पिलीपप नियान सर्व्वमन्त्रानां स्वाहा ॥ कायपरिशुद्ध रावकुदमम सर्व्वदाम सर्व्वः
मतिपरिशुद्धि श्रमदमसर्व्वगात्रानगता ॥ श्रेष्ठी सामानामयक्तु ॥ ॐ वृत्त २ शिव २ स्वा स्थय २ विवा स्थय २ मावय २ विमावय २ सामा स्थय २ विशेषावय २ सम:
सम्भावय २ समन्तज्ञानाभिषेपरिशुद्ध सर्व्वतथागतहृदयाधिष्ठानाधिष्ठिता ॥ ॐ मुनि २ महामुनि महामुनिशाक्यमुनये स्वाहा ॥ ॥ ०० यैषा पूर्व्व
पूर्व्वसर्व्वतथागताष्णीषविजयानाम धारणी महादशधारणी ॥ नियान सापरिशुद्धमधनानामानि लिलिखिताः ॥ जप स्वाहा पूजयेत्तू मनसवा मनसवा कापि
श्चियम स्वकृतिमोष्णकांदिकृपादस्थल पूजां कृत्वा पदहकिमं पादस्य वार्ष्ठ धं यथाविधि सवादनूपानि प्रवकृत्वा पश्चनामनि लिलिखिताय सर्व्वफलं कायगानस्व

नामसमाधिसमापन्न दिगीसर्वतथागतोष्णीषविजयानाम धारणी समाप्ता ॥ ॐ नमो भगवते सर्वत्रैलोक्यप्रतिविशिष्टाय बुद्धाय ते नमः ॥ तद्य
था ॥ ॐ भ्रूं भ्रूं भ्रूं शोधय शोधय विशोधय विशोधय असमसमन्तावभासस्फरणगतिगहनस्वभावविशुद्धे उष्णीषविजयापरिशुद्धे अभिषिञ्चन्तु मां सर्वतथाग
तसुगतवरवचनामृताभिषेकैर्महामुद्रामन्त्रपदैः ॥ आहर आहर ममायुःसंधारणि शोधय शोधय विशोधय विशोधय गगनस्वभावविशुद्धे उष्णीषविज
यापरिशुद्धे सहस्ररश्मिसंचोदिते सर्वतथागतावलोकिनि षट्पारमितापरिपूरणि सर्वतथागतमाते दशभूमिप्रतिष्ठिते सर्वतथागतहृदया १२४
धिष्ठानाधिष्ठिते ॥ मुद्रे मुद्रे महामुद्रे वज्रकायसंहतनपरिशुद्धे सर्वकर्मावरणविशुद्धे प्रतिनिवर्तय ममायुर्विशुद्धे सर्वतथागतस
मयाधिष्ठानाधिष्ठिते ॐ मुनि मुनि महामुनि विमुनि विमुनि महाविमुनि मति मति महामति ममति सुमति तथता भूतकोटिपरिशुद्धे विस्फुटबुद्धिशुद्धे ॐ हे हे जय जय विज

॥वादनक्षीनमस्यामिवामनरागावगिपिनावायदुमबनीयागयदशुष्मानगीयानिकानिविहृयानित्यघच यानिकानिविमदमायाया॥
निकानिविहृयानियानिकानिविनयायशाविकृपडवाकाविकृपाययाहाकाविदक्षामिकायायो४कोविश्मडवाकोविश्यमरणे स्यमार्ग
वृक्षावाऽस्यघच सर्व्वानितिमर्व्वाकोदसर्व्वगावानाः॥ एवायपद्मनानपाहिताः॥ऽध्यननख्यनमत्यक्षवनन : मख्यवाकना॥ ॐ॥ॐ॥ॐ॥ॐ
ॐ॥ एनिपाहिताक्षिप्तिमकृपदे : मदमर्व्वमुसानाक्षनकाञ्जिर्मडपनिसानंकानुपनिपाडकृनुपनिपालनंकानु म्भाक्मिबालयनंकानु स्कृ उप
मिदानंकानु मकृपनिदानंकानुयावविष्यसनंकानु क्षपिपनिदानंकानु उक्कापनिदानंकानु कामादक्षदनंकानु सामविष्यनंकानु धनामवैर्षं
कृनु॥गय॥ॐअमृता॥ॐअमृगात्दवेसमृगमीगावक्षामाक्षागमधानयस्माक्षनरहामस्वमदमऽपमान सर्घमाधिनुपसमानसर्व्वकालमृत्युनु

घ सं पूजयेत् धर्मधातुवागीश्वरं आनन्दसूरिकमाचार्यं पिवानसमयेत् विविधवितर्कं वाक्पिंगारवानां सहस्रवारं पूज कृत्वा पताकापुष्पधूपदी-
पगन्धनैवेद्यादिभिः सर्वपूजाभिः पूजयेत् ॥ ॐ नमो भगवत्या उष्णीषविजयानाम धारणीं वाचयेत् ॥ सूक्ष्मप्राणी बैलसूत्रेण सर्वप्राणीनां ये
वंशे अपरिमितायुर्ज्ञानाः विष्णुलोकं दानसंपन्नान् दिनायुर्नष्टं भूमौ आयुः स्वर्गामि सर्वाणि सम्पदा भवन्ति जीवति ॥ पञ्चमायुः सम्पत्तिवर्षाणि
जीवति ॥ स्त्रीणां मातृ भवति ॥ सर्वानागापति पूजा भवति ॥ दीर्घायुर्भूपतिपदमाप्नोति ॥ ॥ आर्योष्णीषविजयानाम धारणी समाप्ता ॥ १२१
॥ ॐ नमो भगवत्यै आर्यप्रज्ञापारमितायै ॥ नमो रत्नत्रयाय ॥ नमो ऽमिताभाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय ॥ नमः
मार्यावलोकितेश्वराय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय ॥ नमो महास्थामप्राप्ताय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय

भस्मीभूतो भवति॥ या पितामह्या मारीचिविद्यादेवतायाः नामग्राहं करोति॥ सापि न हन्यते न बध्यते न दह्यते न मुह्यते न दण्ड्यते न मक्ष्य
पराङ्मुखी॥ ००॥ मारीचिहृदयमारीचि वर्त्तते॥ तद्यथा॥ ॐ पथे रक्ष मम विपथे रक्ष मम उत्पथे रक्ष मम वने रक्ष मम जले रक्ष मम जीवने रक्ष मम पुत्रधने रक्ष मम स्वा
हा॥ ॐ सुप्रतिष्ठिता मारीचिविद्यादेवतायाः ० मीणितपय उत्साः ० मीणितपय राजकुलपामीणितपय श्वजनपदनामीणितपय रुक्तिरायमामीणितप
य चौरभयमीणितपय अग्निभयमीणितपय उदकभयमीणितपय सर्वप्रत्यर्थिकप्रत्यमित्रभयमीणितपय सर्वकालमृत्युनाकालमृत्युसंक्लिशामुख
सम्बाधात्पुत्रि मामनक्ष अस्यास्त्रा मामनक्षः सपथा मामनक्षः॥ ॐ आलोवालो मस्ताः नादल्वपृच्छिताः रक्ष मां सर्वसत्वानांञ्च सर्वभयोप
द्रवेभ्यः स्वाहा॥ नमो रत्नत्रयाय॥ ॐ नमो भगवत्यै आर्य्यमारीचिविद्यादेवतायै॥ तस्या हृदयमावर्त्तयिष्यामि॥ तद्यथा॥ ॐ वर्त्ताली वदाली वरा

पसम सर्व्वग्रहदोषानुपसम सर्व्वदुःखानापसम रागवनितिपिसाचीपर्स्तु भगवती उन्मत्तरक्तउन्मत्त उन्मत्तमूलस्वाहा ॥ ॐ गंगानीर्ग ख्यान्वि उग्रलि
दागमीपुष्पाहीस्वाहा ॥ ॐ पूर्णे नर्मदा नर्पस्तु भगवन स्वाहा ॥ नमः भगवती गौरि गवतिपि साचि पर्स्तु भगवती पिसाचि स्वाहा ॥ ॐ पिसाचि पर्स्तु भगवती
श्रीं हूँ हूँ पिसाचि स्वाहा ॥ आर्य्यपर्स्तु भगवति पिसाचि स्वाहा ॥ ॥ आर्य्यमहाप्रतिसरा भगवती महाविद्याराज्ञी समन्तानासन्नमहासमाप्ता ॥
॥१॥ नमो भगवत्यै आर्य्यमहामायूरीविद्याराज्ञ्यै ॥ एवंमया श्रुतमेकस्मिन्समये भगवान् श्रावस्त्यां विहरति स्म ॥ जेतवने अनाथ १२६
पिण्डदस्यारामे महता भिक्षुसंघेन सार्द्धमर्द्धत्रयोदशभिर्भिक्षुशतैः सम्बहुलैश्च बोधिसत्त्वैर्महासत्त्वैः ॥ तेन खलु पुनः समयेन स्वातिर्नाम भिक्षुः
यात्रमा ॥ अचिरोपसम्पन्नो नवको दहरो विनयाभ्यासे उपसम्पन्नमात्रे ॥ मानन्दश्च नानन्दख्या नवख्या नमपूज्ञा नदद्वश्च गा नपृख्या ण नदक्व गाः

विक्रामतेन च नाम बोधिसत्वेन महासत्वेन ॥ वज्रालंकारेण च नाम बोधिसत्वेन महासत्वेन ॥ आगितवज्रेण च नाम बोधिसत्वेन महासत्वेन ॥
प्रबला ॥ कोशेश्वरेण च नाम बोधिसत्वेन महासत्वेन ॥ समन्तावलोकितेश्वरेण च नाम बोधिसत्वेन महासत्वेन ॥ पद्मकरेण नाम च मेना बोधि
सत्वेन महासत्वेन ॥ लोकशीयानेन च नाम बोधिसत्वेन महासत्वेन ॥ विक्रमिताविक्रमेण च नाम बोधिसत्वेन महासत्वेन ॥ पद्मगर्भेण नाम
बोधिसत्वेन महासत्वेन ॥ पद्महस्तेन च नाम बोधिसत्वेन महासत्वेन ॥ पद्मनेत्रेण च नाम बोधिसत्वेन महासत्वेन ॥ दीपंकरेण च नाम बो
धिसत्वेन महासत्वेन ॥ पद्मश्रियान च नाम बोधिसत्वेन महासत्वेन ॥ मैत्रीयेन च नाम बोधिसत्वेन महासत्वेन ॥ ॥ सर्वैः प्रमुखैः बो
धिसत्वसंघैः परिवृताः पुनरपि लोकधर्मादि जयति ॥ आदौ कल्याणं मध्यकल्याणं पर्यवसानकल्याणं स्वर्थं सुव्यञ्जनं केवलं परिपू

हनुविमर्दय हूं फट् हूं फट् नीलवज्रमूर्धं कवच स्वाहा॥ ॐ मारीचि स्वाहा॥ ॐ वनमवर्त्ति विवदनि रवलालि वलाहं विमर्दय हुं फट् हुं फट् नीलवज्रमू

र्धं कवच स्वाहा॥ ॥आर्यमारीचीविद्यादेवतानामस्थानसमाप्ता॥ ॥ॐ नमो भगवत्यै आर्यग्रहमातृका

यै॥ एवं मया श्रुतमेकस्मिन् समये भगवान् अलकवत्यां विहरति स्म देवनागयक्षगन्धर्वासुरगरुडकिन्नरमहोरगैः परिवृतो नानादि

व्यसमाधिभिर्बुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुभिः अष्टाविंशतिभिर्नक्षत्रैः चतुर्भिर्महाराजैः महाकालमहायक्षकालाधिष्ठानाधिष्ठितामि २६१

ह्यामनविहरति स्म॥ अनेकबोधिसत्त्वमहासत्त्वगणादिपरिवृतः॥ ॥तद्यथा॥ वज्रपाणिना च नाम बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन॥ वज्र

वस्तुनेन च नाम बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन॥ वज्रसेनेन च नाम बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन॥ वज्रचापहस्तेन च नाम बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन॥ वज्र

तथागतायपिपृष्ट्वा ॥ तद्भृत्रवमाधवत्रमाच्छ वृमनापिकानुबु गाथियद्दर्दत प्रतालीउपनृपानीपतिकुलानितीचश्मनीयुक्तिनिपुद्गलानी
दिव्यपूजामर्थवज्रापंचधूपंचयथानुक्रमवर्द्धु पादनमर्वषायथाउच्छ्रिताचनाक्षतानिपूजितानिपुर्ष्पाणिदत्तानिगमानिनीतादवाश्री
पूनाश्चेवमर्वमत्वाक्षमसयक्तिवज्राक्षयायामदाच्छनुपहतानि जमा ॥ पूजाकर्षायवज्रानिपिर्पताश्चापियथाकामी ॥ तथल्वलुगतगवानभक्ष्म
निक्षथागताल्वदयांदेत्वानुमाविधिजितानामनामिदितिश्चार्थपताम्पीपूज्यिपवमयतिम्मा ॥ तथवक्तमादवपताक्षमादियादयाउक्तयथा ॥
वीमिक्षपूनिता ॥ तथागतापर्दशीमर्वपूजाभिक्षपूजयित्वा प्रतम्यजानुमीनिपत्य कतांजलिपूटोराल्वा गागवक्तमवमा ॥ पूनरपरहीताववयी ॥
गवतातथागतानांहि ॥ मम्पक्षीवृद्धनातकाउगमवांक्तिदमापपर्यायं यतवयीमामर्वाराल्वा धर्मपर्यायधर्मगानमकात्यनक्राजर्यामयुर्षि

शूपविशुद्धीपर्य्यवदापयिष्यन्त्यर्थंप्रकाशयिष्यन्ति ॥ किंनामशितिमहायानं कालनाम धर्म्मपर्य्यायं देशयिष्यन्ति ॥ अथ खलु वज्रपाणिस्तत्पर्षम
ण्डलीमवलोक्य समनाडलक्ष्य वज्राधिष्ठानेन भगवत्कं सूनकासं भगवन्तस्यदक्षीणा काय्यप्रणम्यपुनः ॥ निखिलसत्त्वगर्भं वज्रपर्य्यकापापनयाः
॥ वज्राञ्जलिं कृत्वा स्वहृदयसमीपे स्थाप्य भगवन्तमेतदवोचत् ॥ तदाश्च भगवान्नूपाज्यनूपाथमोजानीडनूपाश्चकना कनूनपाथसत्त्वानां
विलोक्यन्ति स्म ॥ उपद्रवन्ति स्म उत्सादयन्ति स्म ॥ कर्षी विगतव्याधयः प्रतिलभन्ते स्म ॥ कश्चित् विगतशरमयप्रहरन्ति स्म ॥ कर्षी विगतदीर्घायुसत्त्वानां १२८
अल्पायुष्कं कुर्व्वन्ति स्म ॥ सर्व्वसत्त्वानां उपद्रवं निवारयन्ति स्म ॥ तदेमयकुत्र भगवान् गोद्दशं धर्म्मपर्य्यायं यत्र सर्व्वसत्त्वानां सर्व्वोपद्रवव्याधयः कानि
विध्यन्ति ॥ भगवानाह ॥ साधु साधु वज्रपाणि ॥ यत्त्वं सर्व्वसत्त्वानामर्थाय हिताय सुखाय प्रतिपन्नः ॥ शृणु विलम्ब्याध मनाधक्षामि ...

नारुमायऊकाधिपतायनमः४स्वाहा॥वायूवदन॥ ॥ॐकृष्णवर्णुप्यगमेश्वनायनमः४स्वाहा॥उत्तरदल॥ ॥ॐसिन्धीः

उत्तमीनितायरूमृगप्रियायनमः४स्वाहा॥ॐनारुवनमः४स्वाहा॥ईशानदल॥ ॥ॐधूमाभादीनितायश्रीगिकावनमः४स्वाहा॥

॥मण्डलपूर्वद्वारवज्रा॥गवानदक्षिणद्वारवज्रपाणि॥पश्चिमद्वारलोकनाथउत्तरद्वारमञ्जुश्रीलोकनाथपूर्वादिकोणेस

वेप्रहपूर्वदक्षिणकोणे॥सर्वनरूपादक्षिणपश्चिमकोणेमवीपरुवानी॥पश्चिमोत्तरकोणेरारत्नविकामहाविद्यास्वतानीलानुतपिमुखा

पशुआहरूरूवयनव्याख्यानपूजदिवयपमनन्तरूपाविवामयान॥मकिधनाकजपर्यकायविषप्रवजासनो पादमवर्षाकानेध्यायात्॥मण्डल

वाह्य॥पूर्वमध्वानाष्टदक्षिणनविनूरुः४पश्चिमनविन्नपारुः४पावनाश्चारुनादिमें॥मथनृजापवस्तुमाहनपताकामयीं॥यथान

पनियाणीपनियहं पनिपालवं। नानिखकमयनंदणुपनितनं। मरुपनिशनंविमइषनं। विषनागनंपीमाकथनंच धनगावंथनंवकुयाम॥
अथखलु भगवान् भाक्यमुनिस्तथागताः। एतदाणेपूजामन्त्राश्च याग्यासमयथानूक्षामवर्द्धुमापल। दिग्भा। अपदिणाश्च गन्धमण्डलं शत्वा पमस्य
कार्णिकाद्रु द्वादशांगुलप्रमाणं वज्रघोनादि। आतानंकादर्था। गन्धाश्च विकाणितापमानि। विकायद्धवशात्कनं। पमतनूपधनं ऊणाभ्यामिः
गाकामलधनंपिंदनवर्द्धु समर्गाजामालिनविषहं॥ ॥ॐमधात[illegible]ायसादित्यायनमः स्वाहा॥ पूर्व्वदल॥ ॥ॐवज्रामृताबि १२२
क्रमायमाणांमवनमः स्वाहा॥ आग्नेयदल॥ ॥ॐनक्षागाञ्जमानायपमानायनमः स्वाहा॥ दक्षिणदल॥ ॥ॐनाजपूतवृक्षायपी
गावर्द्धुयनमः स्वाहा॥ नैऋत्यदल॥ ॥ॐलाहितावर्द्धुनिर्गमायवृहस्पतायराजगामायदायनमः स्वाहा॥ पश्चिमदल॥ ॥ॐपूस्व

72

विरूपाक्षं भावयिष्यन्ति । ततः पूर्वादि दिग्भागे कर्णिका निष्पन्ति ॥ यच्च खलु पुनर्वज्रपाणि गिरिकूटगिरिकूटं पूर्वपश्चिमका पापिका नाव श्रद्धावन्त्वयानी
यायथा कर्तुं पूजानि पातिष्यन्ति ॥ तेषामकालमृत्युर्नाकालकालं निष्पन्ति ॥ ॥ यच्च खलु पुनर्वज्रपाणि ये सद्धर्ममलमं श्रद्धापूजयिष्यन्ति दिन
दिनमावर्तयिष्यन्ति । ततः धर्म्मदानकाः सर्वग्रहाः सर्वात्मना सर्वाणि परिपूजयिष्यन्ति । ततः कालादपि दानिक नामयिष्यन्ति ॥ पुनः खलु स्क
पूतिस्कन्धगणा पूजनपिये सहसारेका नाम धारणी ॥ तस्या ॥ नमो बुद्धाय । नमो धर्म्माय । नमः संघाय नमो वज्रधराय नमः पद्मधराय ।
नमो कुमाराय नमः सर्वग्रहाणां सर्वपापविपूतकानां । नमो नक्षत्रराजभ्यो स्वाहा ॥ नमो ब्रह्मणे नागिनीनां नमो सर्वयक्षवातानी ॥ तद्यथा ॥ ॐ बु
द्धे २ शुद्धे २ वज्रे २ पद्मे २ धन २ वधन २ ध्मन २ शीत २ शीतये २ धाव्य २ सर्वविघ्नान् समकार्थ्य छिन्द २ भिन्द २ मम कार्य्यान् सर्वदुष्टान् क्षपय स्वाहा ॥

कामवर्ज्जुगादनपुष्पादिपूजांकर्त्तव्या॥प्रत्येकंदीपादयश्चपूजामधूनामेवपूर्वलिखितापंचनक्षत्रक्रियामदर्वशांसानाथी॥एवंवर्ज्जुगुडादनपूजा
विक्तानितावंति॥ ॥आदित्यस्यदधिराकं सामस्यक्षीरराकं भौमस्यमीसराकं बुधस्यपूगादूपराकं बृहस्पतेःपक्वान्नंगुडजायपूष्य
कानंशनैश्चरस्यतिलकमनंसाराणामाषामिश्रकेतोःकृसरान्नं बृहनाष्ठस्यदधिराकं विनुठकस्यदधिमांसराकं विनुपाकस्यक्षीरराकं
कृष्णस्यमाषराकं सिंहस्यमांसं॥ ॥ यथंवलिंदयाग॥ ॥ दानिवजापान्नवग्रहाणांपूजामेतानांजदयानिपठितानिदिवा २००
नियथानुक्रमवर्ज्जुगादनवंगंमिश्रुलर्कोपलाशाखादिरस्वमामार्यकनानूपादिदांजनमर्यदवारुषमाद्गनमोविवानांपत्नाद्गनमनंपाकमर्ज्जयगा॥
पश्चस्यमवजापा॥ग्रहमादौ्गनामस्तनमांसफलवानानूनानयितव्यानि॥॥सर्व्वग्रहआदित्यादयानक्षत्रंनसप्तर्षिकानिष्पक्ति॥८॥

२३

धारस्वायायावस्तुदुर्द्दश्रीं प्रज्ञापारमितादिनादिनदपूवानानुस्थानथित्वा ॥ ॥ पूर्वंउपाध्यायमहानायपूजांकृत्वा उपाध्यायमहानायकाचार्यवाचयेत् ॥ ॥
ध्यनवनवतिवर्षाणिपूर्णयन्ता ॥ विंशति ॥ उपाध्यायाचार्यतत्कायपीताववनताविंशति ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ निष्पन्नवत्वविंशति ॥ सर्व्वद्रष्टा ॥
पूजिता श्च त्वा विंशति ॥ सर्व्वद्रष्टा नि पिता व न दायादि ॥ ॥ सुवार्णसन्प्रादित्यादयभगवतीतदायुरागवन्निति धार्यावासभधाकहिता ॥
सत्वत् ॥ ॥ ॐ ये धर्म्मा हेतुप्रभवा हेतुं तेषां तथागतो ह्यवदत् तेषां च यो निरोध एवंवादी महाश्रमणः ॥ ... ख्ला
कालगवाताविताप्रत्यन्ददिति ॥ ॥ आर्य्याष्टसाहस्रिकायां प्रज्ञापारमितायां समाप्ता ॥ ॥ ७२ ॥
ॐ नमो भगवत्यै आर्यप्रज्ञापारमितायै ॥ एवं मया श्रुतम् एकस्मिन् समये भगवान् राजगृहे विहरति स्म ॥ गृध्रकूटपर्वते महता ः

गं २ दान २ दायय स्तुतादिर्गयामार्गे पूमपकाल नमः २ मौ सर्वसत्वानां च सर्वग्रहनक्षत्र पीडा निवारय २ भगवति महामायाय ध्यापयतु स्वं स्वं र
क्षा २ गं ध्रय २ सर्वपापात्नवा स्तुस्तुन २ वाहिति २ हमम २ मं वि २ हवाहवाचावाकस्मात् उपायम्रान वाति सर्वसत्वानां च सर्वनानर्थं प्रतिपू
नय सर्वतथागता दानयाधिष्ठिता दनय स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा ॥ हूँ स्वाहा फ्रौं स्वाहा ॥ धीं स्वाहा ॥ धूं स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा ॥ पिलाय स्वाहा ॥ मामाय स्वाहा ॥
धनमाम्मनाय स्वाहा ॥ वृक्षाय स्वाहा ॥ वृहस्पतय स्वाहा ॥ शुक्राय स्वाहा ॥ शनैश्चराय स्वाहा ॥ राहवे स्वाहा ॥ केतवे स्वाहा ॥ वृक्षाय स्वाहा २०१
॥ वज्रायुधाय स्वाहा ॥ पश्चिमाय स्वाहा ॥ कुमाराय स्वाहा ॥ सर्वग्रहेभ्यः स्वाहा ॥ सर्वनक्षत्रेभ्यः स्वाहा ॥ सर्वोपद्रवेभ्यः स्वाहा ॥ सर्वविघ्नः
हूं हूं फट् फट् स्वाहा ॥ ॥ ॐ नमो निर्वज्राय ॥ नमह माहकानाम सर्वन मो सर्वप्रपदानि का ॥ दिकमामम्रज्ञायक्ष सपक्ष मिमा नक्षपाम

शुन्यता न शुन्यताया पृथक् रूपं ॥ ॥ वेदना शुन्या शुन्यतैव वेदना वेदनाया पृथक् शुन्यता न शुन्यताया पृथक् वेदना ॥ ॥ संज्ञा शु-
न्या शुन्यतैव संज्ञा न संज्ञाया पृथक् शुन्यता न शुन्यताया पृथक् संज्ञा ॥ ॥ संस्कारा शुन्या शुन्यतैव संस्कारा न संस्काराया पृ-
थक् शुन्यता न शुन्यताया पृथक् संस्कार ॥ ॥ विज्ञान शुन्या शुन्यतैव विज्ञानात् पृथक् शुन्यता न शुन्यताया पृथक् विज्ञानं ॥
॥ एवं पद्मकर्णो शारिपुत्र सर्वधर्मा शुन्यतालक्षणा अनुत्पन्ना अनिरुद्धा अमला विमला अनूना असम्पूर्णा ॥ तस्मात्तर्हि शारिपु-
त्र शुन्यतायां न रूपं न वेदना न संज्ञा न संस्कारा न विज्ञानं न चक्षु न श्रोत्रं न घ्राणं न जिह्वा न कायो न मनो न रूपं न शब्दो न गन्धो न रसो न स-
स्पृष्टव्यो न धर्मा न चक्षुधातु न रूपधातु न चक्षुविज्ञानधातु न श्रोत्रविज्ञधातु न घ्राणविज्ञानधातु न जिह्वाविज्ञानधातु न

गिरुक्तंथनमात्रेण महता श्वबोधिसत्त्वसंधिना॥ गानवतत्पूनमानयत्रवीगोरुगीतिनावनार्गनामध्यर्मपर्यायोपमाधिसमापन्नः॥ नानव
न्नृपूनः समयनाम्यावलोकिताश्वबोधिसत्त्वमहासत्त्वः गगन्धीनायीपिस्कृत्यानमितायीवयामवयवलोकायतिस्म॥ पश्चात्सा
स्वरगावश्च्यानयवलोकायतिस्म॥ अथायुष्मान्॥ विपूणावज्ञानूयाव्यनाम्यावलोकिताश्वबोधिसत्त्वमहासत्त्व आदवावय॥ यः २०२
कश्चित्कुलपुत्रोवाकुलदुहितावा अस्यांगन्धीनायीपिस्कृत्यानमितायीं वयाद्देवकामकृतनकथंनिवितरवंवदीम्॥ कश्चाय्यावलोकिताश्व
रबोधिसत्त्वमहासत्त्वः॥ आयुष्मान्ग॥ विपूणभगवाञ्चाव्यगायः॥ कश्चित्कुलपुत्रोवाकुलदुहितावा अस्यांगन्धीनायीपिस्कृत्यानमितायीं व
यावद्वादकामा॥ नवयवलोकयेगार्थी॥ पश्चात्कश्चाववावश्यानवावलोकायितव्यं॥ ॥ नृपेंशक्षसंत्यावित्रपेननृपानपृथकृ

शारिपुत्र गम्भीरायां प्रज्ञापारमितायां शिक्षितव्यं ॥ बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन ॥ अथ खलु भगवान् तस्मात् समाधेर्व्युत्थायार्याव
लोकितेश्वराय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय साधुकारमदात् ॥ साधु साधु कुलपुत्र एवमेतद्वा एवमेतत् ॥ गम्भीरायां प्रज्ञापारमितायां चर
यं चर्त्तव्यं यथा त्वया निर्दिष्टं अनुमोद्यते सर्वतथागतैरर्हद्भिः ॥ सम्यक्सम्बुद्धैः ॥ इदमवोचद्भगवान् आत्तमना आयुष्मान् शारिपुत्र आर्याव
लोकितेश्वरो बोधिसत्त्वो महासत्त्वः सा च सर्वावती पर्षत् सदेवमानुषासुरगन्धर्वश्च लोको भगवतो भाषितमभ्यनन्दन्निति ॥

॥ आर्यप्रज्ञापारमिताहृदयं समाप्तं ॥ ○ ॥ ये धर्मा इत्यादि ॥ ॥